DSE2-C मध्ययुगीन काव्य तथा उपन्यास साहित्य और नाटक साहित्य

इकाई—।	कबीर के २० दोहे **i)गुरुदेव को अंग** १. सतगुर की महीमा अनॅत,अनॅत किया उपगार । लोचन अनॅत उघाड़िया,अनॅत दिखावणहार ।। २. पीछैं लागा जाइ था, लोक वेद के साथी । आगैं थै सतगुर मिल्या, दीपक दिया हाथी। ३. जाका गुर भी अंधला, चेला खरा निरंध । अंधा अंधा ठेलिया, दून्यूॅ कूप पडंत ।। ४. माया दीपक नर पतॅग, भ्रमि भ्रमि इवै पडंत। कहै कबीर गुर ग्यान थै, एक आध उबरंत ।। ५. सतगुर हम सूॅ रीझि करि, एक कहया प्रसंग। बरस्या बादल प्रेम का, भीजि गया सब अंग।। **ii)विरह को अंग** १. बहुत दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी राम । जिव तरसै तुझ मिलन कूॅ मनि नाहीं विश्राम ।। २. यहु तन जालौं मसि करौं, लिखौं राम नाउॅ । लेखणिं करूॅ करंक की, लिखि लिखि राम पठाउॅ । ३. अंषडियॉ झाईं पडी,पंथ निहारि निहारि । जीभडियॉ छाला पड़या, राम पुकारि पुकारि।। ४. परबति,परबति मैं फिरया, नैंन गॅवाये रोइ । सो बूटी पाऊॅ नहीं, जातैं जीवनि होइ ।। ५. सुखिया सब संसार है,खायैं अरु सोवै । दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै ।। **iii)माया को अंग** १. कबीर माया पापणीं, फंध लै बैठि हाटि। सब जग तौ फंधै पडया,गया कबीरा काटि। २. कबीर माया मोहनी, जैसी मीठी खॉड। सतगुर की कृपा भई, नही तौ करती भांड़।। ३. माया मुईन मन मुवा ,मरि मरि गया सरीर । आसा तिष्णॉ नॉ मुई ,यौं कहि गया कबीरा।। ४. कबीर सो धन संचिए, जो आगैं कूॅ होई। सीस चढाए पोटली, ले जात न देख्या कोई।। ५. कबीर माया मोह की, भई अॅधारी लोइ। जे सूते ते मूसि लिये, रहे बसत कूॅ रोइ ।। **iv)निंद्या को अंग** १. निंदक नेड़ा राखिये, ऑगणि कुटी बॅधाइ। बिन साबण पॉणी बिना,निरमल करै सुभाइ।। २. कबीर आप ठगाइये, और न ठगिये कोइ। आप ठग्यॉ सुख ऊपजैं, और ठग्या दुख होइ।।

	v)कथनी बिना करनी को अंग १. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा ,पंडित भया न कोइ । एकै अषिर पीव का,पढै सु पंडित होइ ।। **vi)भेष को अंग** १. तन को जोगी सब करै, मन कों बिरला कोइ। सब सिधि सहजै पाइए, जे मन जोगी होइ । २. माला फेरत जुग भया, पाय न मन का फेर । कर का मनका छॉड़ि दे, मन का मनका फेर।। अध्यनार्थ विषय: ● कबीर का व्यक्तितत्व ● कबीर की प्रगतिशीलता ● कबीर की भक्तिभावना ● कबीर का समाजसुधार ● कबीर की भाषा ● भावपक्ष, शिल्पपक्ष का अध्ययन।
इकाई—।।	मीराबाई के १० पद (आरंभ के १० पद) १. मण थें परस हरि रे चरण ।। २. तनक हरि चितवां म्हारी ओर ।। ३. म्हारो गोकुल रो ब्रजवासी ।। ४. हे मा बड़ी बड़ी अंखियान वारो, सांवरो मो तन हेरत हंसिके ।। ५. हेरि मा नंद को गुमानी म्हारे मनड़े बस्यो।। ६. थारो रुप देख्यां अटकी।। ७. निपट बंकट छब अंटके।। ८. म्हा मोहणो रुप लुभाणी ।। ९. संवरा नंद नंदन,दीठ पड्यां माई।। १०. आली री म्हारे णेणां बाण पड़ी।। अध्यनार्थ विषय : ● मीराबाई का व्यक्तितत्व,कृतित्च ● मीराबाई की भक्ति ● मीराबाई का प्रगतिशीलता ● मीराबाई की भाषा ● भावपक्ष,शिल्पपक्ष का अध्ययन।

इकाई—।।।	उपन्यास : स्वरुप ,तत्व। उपन्यास कृति : एक पत्नी के नोटस —ममता कालिया लेखक का व्यक्तितत्व एवं कृतित्व कथ्यगत अध्ययन,शिल्पगत अध्ययन।
इकाई— IV	रहीम के २० दोहे **i)**भक्ति १. समय दशा कुल देखि कै, सबै करत सनमान। रहिमन दीन अनाथ को, तुम बिन को भगवान।। २. रहिमन को कोड का करै, ज्वारी, चोर, लबार। जो पति राखनहार है, माखन चाखनहार।। ३. जेहि रहीम तन मन लियो, कियो हिए बिचभौन। तासों दुख सुख कहन की, रही बात अब कौन।। ४. गहि सरनागति राम की, भव सागर की नाव। रहिमन जगत उधार कर, और न कछु उपाव।। **ii) संगति का प्रभाव** १. जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग। चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग।। २. मुढ मंडली में सुजन ,ठहरत नही बिसेषि। स्याम कंचन में सेत ज्यों, दूरि कीजिअत देखि।। ३. यह रहीम निज संग लै, जनमत जगत न कोय । बैर,प्रती, अभ्यास, जस होत होत ही होय ।। ४. रहिमन उजली प्रकृत को, नहीं नीच को संग करिया बासन कर गहे, कालिख लागत अंग।।
	iii)दीनता और बड़प्पन १. जे गरीब पर हित करैं, ते रहीम बड़ लोग। कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग।। २. थोड़ो किए बड़ेन की, बड़ी बड़ाई होय। ज्यों रहीम हनुमंत को, गिरिधर कहत न कोय।। ३. दीन सबन को लखत है, दीनहिं लखै न काये । जो रहीम दीनहिं लखैं, दीनबंधु सम होय।। ४. रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि। जहाँ काम आवें सुई, कहा करे तरवारि।।

	iv) नीति १. खैर, खून खाँसी, खुसी, वैर, प्रीति, मद—पान। रहिमन दाबे न दबै, जानत सकल जहान।। २. रूठें सुजन मनाइए, जो रुठें सो बार। रहिमन फिर फिर पोहिए, टूटे मुक्ताहार।। ३. दानों रहिमन एंक से, जौ लौं बेलत नाहिं। जान परत हैं काक पिक, ऋतु बसंत के माहिं। ४. बिगरी बात बनै नहीं, लाख करो किन कोय। रहिमन फाटे दूध को, मथे न माखन होय।। **v)संत महिमा** १. तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान। कहि रहीम, पर—काज हित, संपति संचहिं सुजान।। २. मथत—मथत माखन, दही—मही बिलगाय। रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय।। ३. रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं। उनते पहले वे मरे, जिन मुख निकसत नाहिं।। ४. दुरदिन परे रहीम कहि, भूलत सब पहचानि। सोच नहीं वित—हानि को, जो न होय हित हानि।। **अध्यनार्थ विषय :** • रहीम का व्यक्तित्व, कृतित्व • रहीम की भाषा • रहीम की भक्तिभावना • रहीम के काव्य की प्रासंगिकता • भावपक्ष, शिल्पपक्ष का अध्ययन।

इकाई—V	बिहारी के २० दोहे **i) नायक—नायिका वर्णन** १. मेरी भव बाधा हरौ राधानागरि सोई। जा तन की झाईं परै स्याम हरित दुति होइ।। २. कहत नटत रीझत खिजत मिलत लजियात। भरे भौन में करत हैं नैननि में सब बात।। ३. नभ लाली चाली निसा चटकाली धुनि कीन। रति पाली आळी अनत आये बनमाली न।। ४. सघन कुंज घन घन तिमिर अधिक अँधेरी राति। तऊन दुरिहै स्याम यह दीप सिखा सी जाति।। ५. सोहत ओढ़े पीत पट स्याम सलौने गात। मनौ नीलमनि सैल पर आतप परयौ प्रभात।।

	ii)संयोग–श्रृंगार वर्णन १. प्रीतम दृग मिहिचत प्रिया पानि परस सुख पाय। जानि पिछानि अजान लौं नैकु न होति जनाय।। २. लटकि लटकि लटकन चलत डटत मुकुट की छाँह। चटक भरयौ नट मिल गयौ अटक भटक मन माँह।। ३. चिरजीवौ जोरी जुरै क्यों न सनेह गंभीर। को घटि ये वृषभानजा वे हलधर के वीर।। ४. मन न धरति मेरौ कहयौ तू आपने सयान। अहे परनि परि प्रेम की परहथ पार न प्रान।। ५. लाल तिहारे विरह की अगनि अनूप अपार। सरसै बरसै नीरहूँ झरहूँ मिटे न झार।। **iii)सिख–नख वर्णन** १. अंग अंग नग जगमगत दीप सिखा सी देह। दिया बढ़ायेहूँ रहै बढौ उजेरो गेह ।। २. पहिर न भूखन कनक के कहि आवतु इहि हेत। दर्पन के से मोरचा देह दिखाई देत।। ३. छकि रसाल सौरभ सने मधुर माधुरी गंध। ठौर झौंरत झँपत झौंर झौंर मधु अंध।। ३. पावस घन अँधियारि में रहयौ भेद नहिं आन। राति द्यौस जान्यौ परै लखि चकई चकवान।। ५. दिस दिस कुसमित देखिये उपबन बिपिन समाज। मनहु बियोगिनि कौं कियो सर पंजर रितुराज।। **iv)नवरस–इत्यादि वर्णन** १. नहिं पराग नहि मधुर मधु नहि विकास इहिं काल। अली कली ही तें बँध्यौ आगे कौन हवाल।। २. कनक कनक तें सौगुनी मादिकता अधिकाइ। उहि खाये बौराइ जग इहिं पाये बौराइ।। ३. जप माला छापे तिलक सरै न एकौ काम। मन काचै नाचै बृथा साँचे राम।। ४. तज तीरथ हरि राधिका तन दुति कर अनुराग। जिहिं ब्रज केलि निकुंज मग पग पग होत प्रयाग।। ५. जगत जनायौ जिहिं सकल सो हरि जान्यौ नाहिं। ज्यों आखनि सब देखियै आँख न देखी जाहिं।। **अध्यनार्थ विषय :** • बिहारी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व • बिहारी की प्रासंगिकता • बिहारी की अलंकार योजना • बिहारी की भाषा • भावपक्ष, शिल्पपक्ष का अध्ययन ।

इकाई— IV	नाटक : स्वरूप, तत्व। नाटक कृति : महाभोज — मन्नू भंडारी लेखक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व कथ्यगत अध्ययन, रंगमंचीय अध्ययन, तात्विक मूल्यांकन।
इकाई— I	काव्य साहित्य: १. अकाल और उसके बाद — नागार्जुन २. कहॉं तो तय था चिरागॉं हरेक घर के लिए — दुष्यंत कुमार ३. इस को भी अपनाता चल — गोपालदास ‘नीरज’ ४. पालतू कुत्ता — मालती शर्मा ५. घर — श्रीप्रकाश शुल्क उक्त रचनाओं का, कथ्यगत एवं शिल्पगत अध्ययन।
इकाई— II	कहानी साहित्य : १. उसने कहा था— चंद्रधर शर्मा ‘गुलेरी’ २. भिखारन — रविंद्रनाथ टागोर ३. ककडी की कीमत — चतुरसेन शास्त्री ४. कप्तान — शिवरानी देवी ५. बदबू — सूरजपाल चौहान उक्त रचनाओं का, कथ्यगत एवं शिल्पगत अध्ययन।
इकाई— I	काव्य साहित्य : १. झॉंसीवाली रानी — सुभद्राकुमारी चौहान २. मधुशाला — हरिवंशराय बच्चन ३. गीत फरोश भवानीप्रसाद मिश्र ४. रोटी और संसद — धूमिल ५. भूख — सर्वेश्वरदयाल सक्सेना उक्त रचनाओं का, कथ्यगत एवं शिल्पगत अध्ययन।
इकाई— II	कहानी साहित्य : १. पत्नी — जैनेंद्र कुमार २. बेटा — अमृता प्रीतम ३. शर्त — रतन कुमार सांभरिया ४. ईश्वर का द्वंद — मनोज रूपडा उक्त रचनाओं का, कथ्यगत एवं शिल्पगत अध्ययन।